वर्ष–9 अंक–4, अप्रेल 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

बिहार दिवस 2018

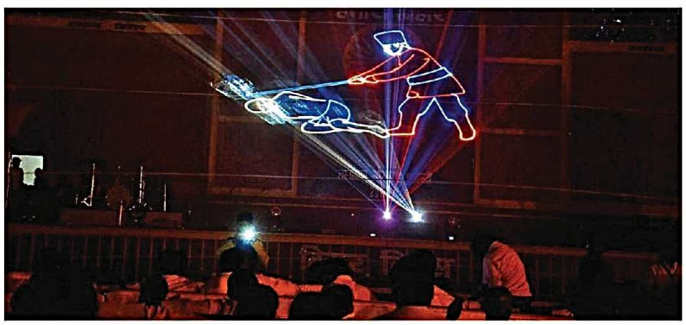

छाया - शैलेन्द्र कुमार

वर्ष - 9, अंक-4, अप्रेल 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
चैतन्य प्रसाद

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

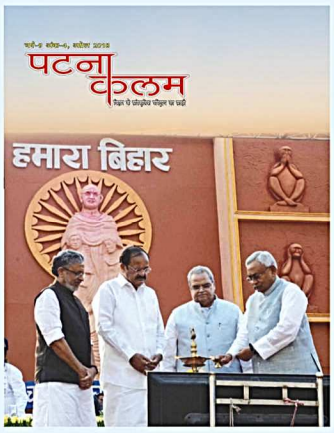

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

विकास की नित नई उंचाइयों के साथ अब बिहार की अपेक्षायें भी उंचाइयां छू रही है। विकास की नई रोशनी ने बिहार को भी दुनिया के सांस्कृतिक वैभव के मध्य अपने को स्थापित करने का संकल्प दिया है। हमारी सांस्कृतिक विरासत पहले भी हमारे पास थी, आज सरकार की कोशिशों से वे इतनी प्रकाशित हैं कि दुनिया की आंखें विस्मित होकर उसे निहार रही हैं और हम अपने आपको उसका हिस्सा पाकर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। कला के विविध रुप ही नहीं, पुरातत्व की तलाश से लेकर संग्रहालयों के आधुनिकीकरण तक,ग्रामीण स्कूलों के खेल के मैदानों से लेकर अत्याधुनिक स्टेडियमों तक, हमने हर चीज संवारने की कोशिश की,जो हमें अपने ऊपर गर्व करने का अवसर दे सकती है।

बिहार दिवस अवसर होता है जब अपनी हम सफलता के उत्साह को जश्न का स्वरुप देते हैं और आनेवाली चुनौतियों के लिए उर्जस्वित होते हैं। इस वर्ष भी 22 से 24 मार्च हरेक बिहार वासी,चाहे वे सीमांत के गांव में हों या किसी दूर देश की छांव में, हमने अपने उत्साह से उन्हें जोडने की कोशिश की और वे हमारे साथ रहे। इन तीन दिनों में देश की सांस्कृतिक विविधता और कला की असीमता के हम साक्षी बने। वास्तव में यही विराटता बिहार की पहचान भी है, ईसा के 500 साल पहले से ईसा की सातवीं आठवीं शताब्दी तक, जबकि महावीर और बुद्ध,चंद्रगुप्त और चाणक्य, मौर्य और गुप्त साम्राज्य यहां हुए,उस समय बिहार से ही भारत की पहचान थी।नालंदा और विक्रमशिला में दुनिया भर से सैकड़ों विद्यार्थी ज्ञान की तलाश में पहुंच रहे थे। मेगास्थनीज, फाहियान और ह्वेनसांग के यात्रा विवरणों में बिहार की मेधा और समृद्धि की झलक आज भी रोमांचित करती है। आज भी हम देश से इतर कभी सोच ही नहीं सकते,आश्चर्य नहीं कि देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा था, वर्षों तक बिहार का इतिहास ही भारत का इतिहास रहा है।

बिहार दिवस एक बार फिर बिहार को उसी शिखर पर ले जाने के संकल्प का अवसर होता है।हम कहां हैं, क्या कर सकते हैं,महत्वपूर्ण यह नहीं, महत्वपूर्ण यह है कि हम जहां हैं वहां बिहार को शीर्ष पर ले जाने के लिए क्या कर रहे हैं। हम नालंदा के ज्ञान से अभिभूत थे,अब तेल्हाडा की खुदाई से पता चल रहा है कि ज्ञान की यह परंपरा और भी पुरानी है,वास्तव में विरासत हमें भविष्य से मुकाबले का आत्मविश्वास देती है और उत्साह भी। ज्ञान की इसी परंपरा की तलाश में हम एक ओर लखीसराय में उत्खनन की शुरुआत करने जा रहे हैं दूसरी ओर मिथिला चित्रकला संस्थान के के रुप में अपनी परंपरा को भावी पीढियों तक पहुंचाने की तैयारियां मूर्त रुप ले रही हैं।

'पटना कलम' के इस अंक में बिहार दिवस की विराटता और व्यापकता से आप परिचित हो सकेंगे।हमारा उद्देश्य है विराटता के इस झलक की अनूगूंज वर्ष भर हमारे जेहन में बनी रहे।

शुभकामनाओं के साथ

चैतन्य प्रसाद

(चैतन्य प्रसाद)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

बिहार दिवस

बिहार और गांधी के सरोकारों को किया गया याद

बिहार की स्थापना के 106 वर्ष पूरे होने पर गांधी मैदान में मुख्य समारोह का उद्घाटन महामहीम उपराष्ट्रपति एम वैंकैया नायडू, महामहीम राज्यपाल सत्यपाल मलिक, माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, माननीय उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। इस वर्ष बिहार दिवस समारोह के साथ ही चंपारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह का समापन भी आयोजित हुआ।

इस अवसर पर अपने संबोधन में उप राष्ट्रपति ने कहा कि बिहार के चंपारण ने अहिंसाको हथियार का आकार दिया। यहां से यह देश और दुनिया में फैला। सत्याग्रह की जन्मभूमि भी यही है। महात्मा गांधी ने यहीं से दुनिया को बता दिया कि एटम बम से भी अधिक शक्तिशाली है अहिंसा। यह लोगों के साथ-साथ शासन को भी बदलने की ताकत रखता है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि अपनी संस्कृति और सभ्यता को जिंदा रखने के लिए जरूरी है कि हम उसके बारे में अपनी अगली पीढ़ी को बताएं। पूजा पद्धतियां अलग-अलग होते हुए भी हमारी संस्कृति एक है। लोग अपने हिसाब से पूजा-पाठ करते हैं। नास्तिकों की ओर संकेत करते हुए वेंकैया ने कहा कि कुछ लोग खुद को भगवान मानते हैं। उनसे भी किसी तरह की दिक्कत नहीं है, लेकिन देश में जो भी लोग रहते हैं, वह सारे भारतीय हैं। 130 करोड़ लोग भारतीय हैं। इसमें मुसलमान, ईसाई, सिख, हिन्दू कोई भी हो सकता है। बिहार की धरती को नमन करते हुए वेंकैया ने कहा कि अहिंसा की शुरुआत यहीं से हुई है।

श्री नायडू ने कहा कि मैं यहां आकर प्रसन्न और गौरव का अनुभव कर रहा हूं। सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से बिहार का इतिहास गौरवशाली रहा है। मैंने बचपन में पढ़ा था कि गुप्ता पीरियड स्वर्ण युग था, जिसका नाता बिहार से ही था। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार आगे बढ़ रहा है। बिहार आगे बढ़ेगा तभी देश आगे बढ़ेगा। इन्होंने विकास के साथ-साथ सुशासन को मुद्दा बनाया है, जो प्रशंसनीय है। मुख्यमंत्री न सिर्फ राज्य का विकास कर रहे हैं, बल्कि सामाजिक कुरीतियों के खात्मे को भी व्यापक अभियान चला रहे हैं। शराबबंदी कर उन्होंने ऐतिहासिक काम किया है। गांधी जी भी नशा के सख्त खिलाफ थे। इन्होंने गांधी के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया है। हमारे देश की एक कमजोरी है कि हम अपने इतिहास को भूल जाते हैं। प्रधानमंत्री ने भी विकास के मुद्दे पर चलने की बात कही है। कृषि को प्रमुखता देते हुए वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने का लक्ष्य तय किया गया है। पर, इस पर ठोस काम होना चाहिए, तभी इसमें सफलता मिलेगी।

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने कहा कि बिहार के पास सबसे बड़ी संपदा के रूप में जल है। जल के बल पर बिहार कृषि क्षेत्र में काफी तरक्की कर सकता है। कृषि रोडमैप के जरिए बिहार सरकार ने अपने इरादे भी जाहिर कर दिए हैं। अगर ईमानदार कोशिश हुई तो दूसरी हरित क्रांति का लाभ सबसे ज्यादा बिहार को मिलेगा। राज्यपाल ने मोहनदास को महात्मा गांधी बनाने के लिए चंपारण की धरती का आभार प्रकट करते हुए कहा कि बिहार ने गांधी के सत्याग्रह की ओर फिर से दुनिया का ध्यान खींचा है। गांधीजी ने पहली बार चंपारण में ही ईश्वर, अहिंसा और सत्य का साक्षात्कार किया था। उन्होंने यहां की गरीबी देखकर ही पहली बार पैंट-कोट छोड़कर धोती धारण करने का निर्णय लिया था। अपने इस निर्णय पर गांधी इतने अडिग थे कि ब्रिटेन के दौरे पर भी वह घुटने तक के वस्त्र पहनकर ही गए थे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि 10-15 फीसदी युवा भी गांधी के विचारों को अपना लें तो समाज बदल जाएगा। गांधी के विचारों को नई पीढ़ी आत्मसात करे, इसलिए चंपारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह पूरे एक साल तक मनाया गया। हर घर तक गांधी के विचारों को पहुंचाने के लिए पत्रक बांटे गए। स्कूलों में गांधी जी के जीवन से जुड़ी कथा का वाचन शुरू कराया गया है। उन्होंने कहा कि गांधी की स्मृति को जागृत रखने के लिए पटना में बापू टावर बनेगा। इसकी ऊंचाई अद्भुत होगी और यह अद्वितीय होगा। इसमें गांधी के विचारों और कृत्यों को प्रदर्शित किया जाएगा। इसकी डिजाइन बन रही है। उन्होंने कहा कि हमलोग बिहार दिवस के आयोजन पर न्याय के साथ विकास के अपने संकल्प को दोहराते हैं। बहुतों को लगता है कि ये लोग सिर्फ इवेंट करते हैं। पर, हमारा हर इवेंट के साथ एक संकल्प होता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सिद्धांत के बिना राजनीति नहीं होनी चाहिए। हमलोगों का सिद्धांत है, न्याय के साथ विकास। इसे कभी नहीं छोड़ा। पर,

आज-कल देखते हैं न, कुछ लोगों का सिद्धांत से कोई लेना-देना नहीं। दिनभर ट्वीट करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि लोगों को सात सामाजिक पाप कभी नहीं करना चाहिए। कहा कि काम के बिना धन, सिद्धांत के बिना राजनीति, विवेक के बिना सुख, चरित्र के बिना ज्ञान, नैतिकता के बिना व्यापार, मानवता के बिना विज्ञान और त्याग के बिना पूजा नहीं होती।

बिहार दिवस पर अमूल्य धरोहरों पर गर्व करते हुए उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि वर्ष 2000 में बिहार से झारखंड अलग हुआ तो लोग कहते थे कि बिहार का क्या होगा? सारे खदान-खनिज झारखंड में चले गए थे। हमारे पास पानी, मिट्टी और मेहनतकश लोग थे। कोयला और अभ्रक के बिना तो दुनिया जिंदा रह सकती है, लेकिन पानी के बिना नहीं रह सकती है। हमारी महान विरासत हमारे पास थी। 2005 में एनडीए की सरकार बनी तो हमलोगों ने दिखा दिया कि विकास क्या होता है। आइए बिहार दिवस के मौके पर हमलोग संकल्प लें कि बिहार को विकसित राज्य बनाएंगे। अपनी सरकार की सराहना करते हुए सुशील मोदी ने कहा कि बिहार पहला राज्य है, जहां पंचायती राज व्यवस्था में आधी आबादी को 50 फीसद और सरकारी नौकरियों में 35 फीसद आरक्षण दिया गया।उन्होंने कहा कि मैं नीतीश कुमार को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने बिहार दिवस मनाना शुरू किया। नहीं तो लोग भूल गए थे कि बिहार की स्थापना कब हुई थी। बिहार के हर जिले और भारत में ही नहीं, बल्कि न्यूयॉर्क और लंदन समेत कई देशों में इसका आयोजन हो रहा है।

इस अवसर पर उप राष्ट्रपति ने चार पुस्तकों का लोकार्पण किया। इनमें बापू की चिट्ठी और एक था मोहन कथा वाचन शामिल हैं। तीसरी किताब चंपारण की कथा को चित्रों के माध्यम से कॉमिक्स का रूप दिया गया है। चौथी पुस्तक है नील के धब्बे। इसमें पंडित राज कुमार शुक्ल, जय प्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया के विचारों-कृत्यों को दर्शाया गया है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे शिक्षा मंत्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा ने कहा कि राज्य के हर जिले व स्कूलों में बिहार दिवस समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस मौके पर विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार चौधरी, विधान परिषद उप सभापति हारुन रशीद, मंत्री डॉ. प्रेम कुमार, नंदकिशोर यादव, बिजेंद्र प्रसाद यादव, ललन सिंह, मंगल पांडेय आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे। मंच पर मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह,मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव चंचल कुमार भी मौजूद रहे। धन्यवाद ज्ञापन शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव आरके महाजन ने किया।

गांधी मैदान,एस के मेमोरियल हाल और रवीन्द्र भवन में आयोजित तीन दिनों के रंगारंग आयोजन का समापन गांधी मैदान में महामहीम राज्यपाल श्री सत्यपाल मलिक के करकमलों हुआ।इस अवसर पर अपने संबोधन में महामहीम ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कृषि और मैं शिक्षा में सुधार के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजनीतिक नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए विश्वविद्यालयों में छात्रसंघ चुनाव कराया जा रहा है। बिहार में विकास की असीम संभावना है। दूसरी हरित क्रांति यहीं से आएगी। राज्यपाल ने कहा कि फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास तीसरी कसम पर बनी फिल्म को उन्होंने 15 बार देखा। भगवान बुद्ध, महावीर, चंद्रगुप्त, सम्राट अशोक की गौरवशाली बिहार को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

विभिन्न वर्गों की प्रतियोगिता और गतिविधियों के आधार पर मुंगेर को सर्वश्रेष्ठ जिला घोषित कर शील्ड दिया गया। चंपारण सत्याग्रह से जुड़े विषयों पर निबंध लेखन प्रतियोगिता में 2200 बच्चों ने भाग लिया था। राज्यपाल ने जमुई की दीपिका कुमारी को कक्षा 9 से 11वीं वर्ग में प्रथम पुरस्कार के तौर पर 25 हजार रुपए दिया। मुजफ्फरपुर की आद्रिका पराशर, सहरसा की समाधि वर्मा, अंग्रेजी लेखन में पूर्वी चंपारण के श्वेता राज, पश्चिम चंपारण के आकाश राज को भी राज्यपाल ने पुरस्कार दिया। बिहार दिवस के दौरान तरंग प्रतियोगिता, सुगम संगीत, क्विज, कविता लेखन, वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

नेहा कुमारी

उत्साह से लवरेज रहा बिहार

बिहार दिवस के अवसर सभी जिलों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ प्रतियोगिताओं के आयोजन किए गए।मुख्य आयोजन राजधानी में हुआ।गांधी मैदान के साथ एस के मेमोरियल हाल और रवीन्द्र भवन में भी अलग अलग विधाओं में कई तरह के कार्यक्रम आयोजित हुए।कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा इस अवसर गांधी के जीवन दर्शन पर केंद्रित गांधी फिल्म महोत्सव का भी आयोजन किया गया। फिल्म समारोह निदेशालय,नई दिल्ली और फिल्म्स डीविजन,मुंबई के सहयोग से आयोजित इस फिल्म महोत्सव में श्याम बेनेगल की फिल्म 'मेकिंग आफ महात्मा', रिचर्ड ऐटनबरो की फिल्म 'गांधी',विधु विनोद चोपडा की फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' और केतन मेहता कि फिल्म 'सरदार' के साथ 12 से अधिक वृतचित्रों का भी प्रदर्शन किया गया।गांधी मैदान में निर्मित विशेष प्रेक्षागृह में 'गांधी फिल्म महोत्सव' का उद्घाटन कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि द्वारा किया गया।इस अवसर पर प्रधान सचिव चौतन्य प्रसाद,अपर सचिव आनंद कुमार,उप सचिव तारानंद वियोगी के साथ अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों द्वारा भी तीन दिनों तक लगातार कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे। लेजर शो के जरिए गांधी मैदान में चंपारण सत्याग्रह की संक्षिप्त गाथा को बेहद खूबूसरती के साथ पेश किया गया। बाल-विवाह, दहेज प्रथा और नशाखोरी के विरुद्ध चल रहे अभियानों को भी इस लेजर शो का हिस्सा बनाया गया था।

गांधी मैदान में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में विभा सिन्हा ने अपनी टीम के साथ महात्मा गांधी के प्रिय भजनों को गाकर श्रोताओं को गांधी जी के दर्शन से रूबरू करवाया। बिहार दिवस में डॉ. शांति जैन लिखित 'बिहार गौरव गान' को कला संस्कृति विभाग के कलाकारों ने मुख्य मंच पर जीवंत कर दिया। बिहार की आन-बान-शान और संस्कृति की गाथा को कलाकारों ने खूबसूरती से पेश किया। दर्शक लगातार कलाकारों का तालियों से उत्साह बढ़ाते रहे। विजय कुमार मिश्र की कोरियोग्राफी में हरिकृष्ण सिंह मुन्ना, कुमार उदय सिंह, सोनाली सरकार, तान्या, दिव्या, राधा, मानसी, निशा, पल्लवी साक्षी, दीपक, अतीश, रविकांत, निर्मल कुमार रवि,अरूवद कुमार सहित करीब 35 से ज्यादा कलाकारों ने इसे मंच पर उतारा और दर्शक गर्व की अनुभूति करते रहे। पहले दिन विश्व भर में चर्चित ओशन बैंड की प्रस्तुती हुई। इंडियन और वेस्टर्न म्यूजिक का फ्यूजन अक्सर देखने-सुनने को मिलता है, लेकिन जब कबीर के दोहे और गांधी जी का प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिए जे..बैंड के साथ गाए जा रहे थे, तब दर्शकों का मिजाज देखने लायक था। दूसरे दिन की शाम सूफियाना रही। मशहूर सूफी गायिका हर्षदीप कौर सूफी गीतों को गा रही थी तो हर श्रोता उसमें खुद को डुबा सा महसूस कर रहा था। सूफियाने कलाम ने ऐसा जादू किया कि हर आम व खास उसके जादू से बंधा सा महसूस कर रहा था। एक पल को तो ऐसा लग रहा था कि ईश्वर या खुदा के नूर में हर बंदा समा जाना चाहता है। फारसी, उर्दू और पंजाबी के खूबसूरत अल्फाजो से सजे सूफी गीतों में इश्क भी था और महबूब की चाहत भी। में शुभा मुद्गल की प्रस्तुति पटनावासियों को लंबे समय तक याद रहेगी। तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन शुभा मुद्गल के गीतों ने लोगों को बांधे रखा। उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से प्रेम, विश्वास, नारी सशक्तिकरण की बातों के साथ-साथ प्रकृति के भी गीत सुनाए।

एस के मेमोरियल हाल में देश की स्वतंत्रता के लिए गांधी के अहिंसक आंदोलन की पूरी गाथा चर्चित नृत्यांगना शिखा खरे ने कथक के जरिये मंच पर दिखा दी। वहीं चर्चित गायक वडाली बंधु के पूरण चंद वडाली के पुत्र लखूवदर वडाली ने सूफी गायन से संगीत की एक अनोखी दुनिया का सफर करा दिया। उनके सूफी गीतों ने देर रात तक संगीतप्रेमियों को झुमाया। दूसरे दिन ओमान से आई गायिका वंदना ज्योतिर्मयी ने गजल, चौती समेत सुगम संगीत की मनमोहक गायिकी पेश कर पटनाइटएस का दिल जीत लिया। यहीं इशारा पपेट थियेटर ट्रस्ट की ओर पपेट शो किया गया। इसमें कलाकारों ने गांधी जी के बचपन से लेकर उनकी अफ्रीका यात्रा, चंपारण सत्याग्रह, समेत स्वतंत्रता संग्राम के अनेक प्रसंग दिखाए गए। कलाकारों की टीम ने स्टेज पर कठपुतलियों को लेकर बेहद अनोखे अंदाज में अपनी प्रस्तुति दी। इस शो का डिजायन और निर्देशन दादी डी पदमजी ने किया था। गीत और संगीत का बेहद खूबसूरती से इसमें इस्तेमाल किया गया। इसके कलाकारों में विवेक कुमार, मोहम्मद शमीम, नीतू कुमारी, शम्शुल, विराज श्रीवास्तव, अविनाश कुमार आदि शामिल थे।

रवीन्द्र भवन में मैहर घराने के सितार वादक लक्ष्य मोहन और सरोद वादक आयुष मोहन की युगलबंदी ने कई प्रस्तुति दी। मोहन बंधुओं ने गांधी जी के वैष्णव भजन धुन से शुरुआत कर राग ूझझोटी के अथाप जोड़ व धमार का प्रदर्शन किया।

कैनवास पर मूर्त हुए गांधी

विगत 22 मार्च को 106वां बिहार स्थापना दिवस पर पटना संग्रहालय अवस्थित कला दीर्घा में माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा एक भव्य प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया,अवसर पर कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ,मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह,मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव चंचल कुमार और कला संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव चौतन्य प्रसाद भी उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी कलाकृतियों का सृजन बिहार संग्रहालय के लोकार्पण के समय चंपारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने पर कला,संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार द्वारा आयोजित ष्कलाकारों की नजर में बापू ष्कलाशिविर सह कार्यशाला जो दिनांक 02 से 06 अक्टूबर 2017 में किया गया था।इस कार्यशाला में देश के महत्वपूर्ण लगभग 30 से ज्यादा चित्रकार,मूर्तिशिल्पी तथा छापा कलाकारों ने भाग लिया था।

इस कलादीर्घा में देश के मूर्धन्य चित्रकार,प्रिंट मेकर ज्योति भट्ट(ज्योतिंद्र मानशंकर भट्ट)द्वारा कई माध्यमों को मिलाकर सृजित कलाकृति में महात्मा के कारुणिक रूप को दर्शाने का प्रयास किया गया है जो दर्शकों को आकर्षित करता है।राजकोट (पंजाब)के वरिष्ठ चित्रकार सिद्धार्थ जी के तैलीय कलाकृति शीर्षक हीन में महात्मा गांधी के चम्पारण आगमन से लेकर उनके गांधी बनने तक कि यात्रा को बखूबी सृजित किया गया है ।कलकत्ता के युवा मूर्तिशिल्पी देवांजन रॉय के श्वेत श्याम मिक्समाध्यम में कागज पर सृजित कलाकृति में महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गए आंदोलन को लयात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।कलकत्ता के युवा चितेरा सनातन डिंडा ऐसे चित्रकार हैं जिनके द्वारा सृजित पहली मदर टेरेसा के कलाकृति को बकिंघम पैलेस में प्रदर्शित होने का गौरव प्राप्त है।तैलीय माध्यम में कैनवास पर सृजित इनकी शीर्षकहीन कलाकृति में गौतम बुद्ध के अश्क को जाँचा परखा जा सकता है।युवा चितेरा रियास कोमु द्वारा कैनवास पर एक्रेलिक माध्यम में सृजित श्वेतश्याम महात्मा गाँधी के शवीह चित्र भले ही आमजन को देखी हुई लगे पर जब उसे आप गंभीरता पूर्वक अवलोकन करेंगे तो ये शवीह चित्र काले पाउडर द्वारा सृजित होने का एहसास देते हैं।वरिष्ठ चित्रकार मनु पारेख आज परिचय के मोहताज नही हैं।यहाँ प्रदर्शित कैनवास पर ऐक्रेलिक माध्यम में सृजित चित्र श्मॉर्निंग लाइट एट बनारसश अपने सुखद रंग अभिव्यंजना के कारण प्रेक्षकों के दिलों में सीधे उतर जाता है।

लोककला से प्रभावित चित्रकार श्रीमती माधवी पारेख गुजरात से ताल्लुकात रखती हैं तथा लोककला से पूर्णत: प्रभावित हैं।एक्रेलिक माध्यम में कैनवास पर सृजित कलाकृति श्गॉडेशश एक रहस्यमयी बातावरण में प्रेक्षकों को ले जाता है।शक्ति की देवी दुर्गा के साथ कई प्रतीकों को अपने चित्रफलक पर संयोजित इनके चित्रों बालपन की सहजता स्पष्ट रूप जे दृष्टिगत है।युवा चितेरा परेश मैती के बड़े चित्र फलक पर महात्मा गाँधी को चंपारण जाने के क्रम में ट्रेन से पटना उतरते,नील की खेती करने वाले किसानों के बीच उनका दु:ख दर्द सुनते आदि दृश्यों को संयोजित कर रूपायित किया गया है।पहली नजर में कलाप्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।देश के समकालीन कला को नई दिशा देने वाली चितेरा अर्पणा कौर पंजाब से वास्ता रखती हैं ।इनकी तैलीय चित्रकृति श्चरखाश कलाप्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित ही नही करती वरण अपने में बांधे रखती है। कैनवास के काले चित्र सतह पर उकेरे गए चरखा के साथ भारतीय देवी देवताओं के अस्त्र-शस्त्र को विम्वित कर सृजित यह कलाकृति वर्षों तक कलाप्रेमियों के जेहन में कौंधती रहेंगी।राजस्थान के युवा चित्रकार धर्मेन्द्र राठौड़ द्वारा सृजित तैलीय चित्रकृति श्जर्नीश आकार निराकार में महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व को ज्यादा महत्वपूर्ण ढंग से उभारा गया है।गहरे एवं कोमल रंगों के सुखद संयोजन इस चित्र को औरों से अलग करता है।भोपाल कि सरजमीं से जुड़े मनीष पुष्कले अपनी अलग चित्रशैली के कारण अपनी अलग पहचान के लिए समकालीन कलाजगत में जाने जाते हैं।इनकी मिक्स माध्यम कि कृति श्स्टोरी ऑफ दीदारगंज एण्ड गंगाश अपने कोमल रंग एवं तुलिकाघात के कारण प्रेक्षकों में एक कौतुहल पैदा करता है । बंगाल की जमीन से गहरे रूप से जुड़े वरिष्ठ चित्रकार धीरज चौधरी के तैलीय चित्रकृति में रेखांकन जैसे भाव के साथ नीलहे खेतीहारों की कथा व्यथा,ओद्योगिक क्रांति का विरोध तथा आजादी के आन्दोलन को रुचिकर ढंग से रूपायित किया गया है।इनके चित्रों की एकल प्रदर्शनी विगत दिनों बिहार संग्रहालय में भी आयोजित कि गयी थी।

कलकत्ता के वरिष्ठ चित्रकार अमिताभ सेन गुप्ता के तैलीय चित्रकृति श्चम्पारण 1917श्महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़े पहलुओं को तथा उनके द्वारा लिखित डायरी के पन्नों को रुचिकर ढंग से रूपायित किया गया है।इस चित्र में कोमल एवं चटख रंगों का प्रयोग कलाप्रेमियों को अपनी ओर खींचता है।उड़ीसा के मूर्धन्य चित्रकार जतिन दास आज भारतीय कला के पर्याय माने जाते हैं।कला में अभिव्यक्ति एवं सौन्दर्यबोध के पक्षधर

हैं।इनकी तैलीय चित्रकृति श्इम्परर अशोक विकम बुद्धिष्टश में इनकी कोमल रंग योजना और तुलिकाघात प्रेक्षकों पर अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ती है।बड़ौदा के ख्यातिनाम मूर्तिशिल्पी हिम्मत साह भारतीय कला के पर्याय माने जाते हैं।इस प्रदर्शनी में इनके द्वारा ब्रॉन्ज माध्यम में गढ़े गए मूर्तिशिल्प अपनी खास विशेषता दोआयामि एवं त्रिआयामी प्रभाव लिए बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं।बंगाल के ख्यातिप्राप्त चित्रकार गणेश हलोई अपनी तरह के अलग चित्रकार हैं,राइस पेपर पर सृजित इनकी कृतियों में प्रकृति के भौतिक रूप को न चित्रित करके उसके अस्तित्व बिम्ब को अपनी अनुभूतियों के आधार पर चित्रित करने में सिद्धहस्त हैं।प्रदर्शित हल्के –गहरे हरे रंगीय इनके चित्र, प्रेक्षकों को अपनी ओर आकृतियाँ ढूंढने के लिए आमंत्रित करते हैं।केरल के जाने माने मूर्तिशिल्पी आर0 एस0 राधाकृष्णन द्वारा सृजित धातु माध्यम के मूर्तिशिल्प प्रेक्षकों में एक कौतुहल उत्पन्न करते हैं।स्टील और ब्रॉन्ज माध्यम में गढ़े गए ये मूर्तिशिल्प श्वेत श्याम जैसी आभा लिए रोचक प्रभाव पैदा करते हैं जो कलाप्रेमियों को सम्मोहित करते हैं।त्रिपुरा कि युवा चितेरा जयश्री चक्रबर्ती के तैलीय चित्रकृति में प्रकृति के अनसुलझे रहस्यों को समझने समझाने की उत्कंठा परिलक्षित होती है।

प्रदर्शनी में प्रदर्शित केरल के चित्रकार चंद्रा भट्टाचार्जी द्वारा सृजित तैलीय चित्रकृति में हल्के श्याम रंगीय धुंध में महात्मा गांधी की उभरती आकृति उन्हें विशेष अभाषित करती है।महाराष्ट्र के प्रभाकर कोल्ते देश के प्रमुख चित्रकार के रूप में जाने जाते हैं।राष्ट्रीय कला धारा को इन्होंने एक नई दिशा प्रदान किया है।इस प्रदर्शनी में इनके द्वारा चित्रफलक पर एक्रेलिक माध्यम में सृजित चित्रों में हल्के और चटख रंगों में कई प्रकार की दृश्यावलियां उभरती नजर आती हैं जो कलाप्रेमियों के आंखों को सुकुन प्रदान करती है।दिल्ली के चित्रकार जय झरोटिया के चित्रों में महात्मा गांधी की अगुआई में जनसैलाब को गहरा महसूस किया जा सकता है तथा तत्कालीन ग्रामीणों के बीच महात्मा के आंदोलन के प्रति उत्सुकता को समझा जा सकता है। कलकत्ता की कलाकार जयश्री वर्मन की परिवारिक पृष्टभूमि भी कला संस्कारों से ओत प्रोत रही है।इस प्रदर्शनी में इन्होंने बिहार के लोक आस्था के पर्व छठ को अपना विषय बनाकर इंस्टॉलेसन आर्ट किया है जिसमें चुनरी,पीतल के सुप और डलिया का उपयोग किया है।

कलकत्ता के युवा कलाकार अभिजीत दत्ता के चित्र फलक पर गैस त्रासदी के अकाट्य सत्य सारगर्भित ढंग रूपायित किया गया है।बंगाल के चितेरे सुब्रत गंगोपाध्याय के चित्र में अतियथार्थवाद के साथ महात्मा का चित्रण प्रेक्षकों से सीधा संवाद करने में सक्षम है।राजस्थान के युवा चित्रकार दिलीप शर्मा ने कागज पर जलरंग माध्यम में श्डेविलश चित्रकृति की रचना की है। गुजरात के मूर्तिशिल्पी अनुप सिन्हा द्वारा शिल्पित काष्ट शिल्प में उभरी नक्काशी अमुर्तन से मूर्तन की यात्रा से अवगत कराता है।केरल के जॉर्ज मार्टिन मूलतः मूर्तिशिल्पी ही हैं।इस प्रदर्शनी में इनके द्वारा सृजित चित्रकृति श स्लाइस ऑफ एंबिएंस श एक प्रकार से प्रेक्षकों के मन में कौतुहल पैदा करते हैं। पश्चिम बंगाल के चित्रकार विवेक संत्रा अपनी बोल्ड आकृतियों को लेकर जाने जाते है।इस प्रदर्शनी में लंबे चित्रफलक पर महात्मा गाँधी की लोकप्रियता की उड़ान को इन्होंने गुम्फित तुलिकाघात से सहजता पूर्वक सृजित किया है जो कलाप्रेमियों को दूर से ही आमंत्रित करता है।

हैदराबाद के मूर्तिशिल्पी पी0 आर0 दरोज द्वारा सिरामिक माध्यम में सृजित शीर्षकहीन मूर्तिशिल्प कलाप्रेमियों को सिर्फ आकर्षित ही नहीं करते वरण उसे छुकर देखने की वलवती इच्छा को जागृत करते हैं।दीपाली दरोज के सिरामिक माध्यम में सृजित मूर्तिशिल्प भले ही चने के अंकुरण के रूप में प्रतिविम्बित दिखाई देते हों पर वे हमारी दवी इच्छाओं को जागृत करने को आतुर दिखाई देते हैं कलाप्रेमियों को ये सहज ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं।कला एवं शिल्प महाविद्यालय पटना के भूतपूर्व व्याख्याता बिरेश्वर भट्टाचार्य राष्ट्रीय फलक पर कभी व्यंग्यात्मक चित्रों के लिए जाने जाते रहे हैं पर इस प्रदर्शनी में इनके द्वारा सृजित कृति महात्मा के विराट व्यक्तित्व को उनकी सादगी के साथ रूपायित किया है जो कलाप्रेमियों के दिलों में लंबे अरसे तक अपना प्रभाव कायम रखेगा।बिहार संग्रहालय के निदेशक तथा देश के ख्यातिनाम छापा कलाकार यूसुफ जी के चित्रों में गाँधी जीवन, दर्शन जिस प्रकार रूपायित कि गयी है उसकी सहजता और सरलीकरण जिसप्रकार आकर्षित करती है नजदीक से देखने पर कई कई परतों में गाँधी के कई बिम्बों के अवलोकन का सुख प्रदान करती है।सही मायने में यह प्रदर्शनी ऐतिहासिक प्रदर्शनी है जो राज्य के कलाप्रियता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्थापित करती है।इस प्रदर्शनी को अमृत प्रकाश साह ने क्यूरेट किया।

बिहार का रंगमंच

होली के रंगों से रंगारंग

सुभागी का एक दृश्य

मार्च महीने की शुरूआत ही रंगों के त्योहार होली से हुई। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय नाटकों से जगमगाता रहा बिहार का रंगमंच। ये महीना भी हाउसफुल रहा। जहाँ प्रेमचन्द रंगशाला, पटना में सोलह दिनों तक अनवरत होता रहा नाटकों का मंचन वहीं बिहार रंगमंच के तीर्थ कालिदास रंगालय में 5 मार्च को आर्ट एण्ड आर्टिस्टको, पटना ने डॉ प्रमोद कुमार सिंह लिखित प्रभात पाण्डेय निर्देशित 'सागर के किनारे' नाटक का मंचन किया। 7 को नाद, पटना द्वारा तीन दिवसीय 'नाद नाट्योत्सव' का पर्दा धमार फाउण्डेशन,पटना द्वारा शबिहार विरासतश लोक वादन के साथ उठा ततपश्चात आयोजक दल ने डॉ अखिलेश कुमार जायसवाल लिखित मो जानी निर्देशित श्मृदंगियाश, 8 को दि स्ट्रगलर्स, पटना ने कृष्ण अम्बष्ट लिखित राहुल कुमार राज निर्देशित श्बचाओ इसेश एवं एम्बिशन, पटना ने हरिशंकर परसाई लिखित बिनीता सिंह निर्देशित 'एक हसीना पाँच दीवाने', 9 को समापन रंग समूह, पटना ने मानव कॉल लिखित स्वरम उपाध्याय निर्देशित 'पाक' के मंचन के साथ हुआ। 12 को बिस्तार, पटना ने शरद जोशी लिखित उज्ज्वला गाँगुली निर्देशित 'एक था गदहा उर्फ अलादाद खां', 13 को न्यू जैसिका स्कूल ऑफ आर्ट, पटना ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र लिखित नीरज कुमार निर्देशित 'अंधेर नगरी' का मंचन किया।

इसी दिन दिनकर कला भवन, बेगूसराय में न्यू एज थियेटर एण्ड रेपट्री वर्कशॉप, बेगूसराय ने मिथिलेश्वर लिखित अवधेश सिन्हा द्वारा नाट्य रूपांतरित नाटक 'डायन' का मंचन अंकिता कुमारी के निर्देशन में किया। इधर कालिदास रंगालय में 18 को कला जागरण, पटना ने ममता मेहरोत्रा लिखित सुमन कुमार निर्देशित 'माधवी', 19 को लक्ष्मी अपराजिता सेवा संस्थान, पटना ने राकेश कुमार लिखित बैधुबाला सिन्हा निर्देशित 'कटाक्ष', 20 को रंगम, पटना ने सआदत सहन मंटो लिखित संतोष कुमार उर्फ रास राज निर्देशित 'अकेली' का मंचन किया। 23 को दि स्ट्रगलर्स, पटना द्वारा आयोजित तीन दिवसीय 'स्ट्रगलर्स थियेटर फेस्टिवल' का पर्दा राग, पटना द्वारा अभिषेक चौहान लिखित रानू कुमार निर्देशित 'द कुरियर मैन' के मंचन के साथ उठा। 24 को आयोजक दल ने हबीब तनवीर लिखित रोशन कुमार निर्देशित 'चरणदास चोर', समापन आयोजक दल द्वारा ही ज्या पॉल सात्रो लिखित जे एन कौशल अनुवादित रजनीश कुमार निर्देशित 'मैन विदाउट शैडो' के मंचन के साथ हुआ साथ ही आई एम ए हॉल, पटना में अभिनव आर्ट्स, पटना ने गजानन माधव 'मुक्तिबोध' लिखित सुमन कुमार द्वारा नाट्य रूपांतरित, मणिकांत चौधरी निर्देशित 'समझौता' का मंचन किया। 24 को आलय, भागलपुर ने दुर्गा बाड़ी मसाकचक, भागलपुर में स्वदेश दीपक लिखित कुमार चैतन्य प्रकाश निर्देशित 'कोर्ट मार्शल', 26 को रंगमार्च, पटना द्वारा कालिदास रंगालय में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से प्रेमचंद लिखित मृत्युंजय शर्मा द्वारा नाट्य रूपांतरित 'सुभागी' का मंचन नूपुर चक्रवर्ती के निर्देशन में हुआ।

27 मार्च (विश्व रंगमंच दिवस) को दिनकर कला भवन, बेगूसराय में मॉडर्न थियेटर फाउण्डेशन, बेगूसराय द्वारा भिखारी ठाकुर लिखित सुशीला कुमारी निर्देशित 'बेटी वियोग' का मंचन अंगिका भाषा में हुआ। इसी दिन सुधांशू रंगशाला, कला भवन पूर्णिया में कला भवन, नाट्य विभाग, पूर्णिया द्वारा दो दिवसीय 'विश्व रंगमंच दिवस नाट्योत्सव 2018' का पर्दा आलय, भागलपुर द्वारा स्वदेश दीपक लिखित कुमार चैतन्य प्रकाश निर्देशित नाटक 'कोर्ट मार्शल' के मंचन से उठा। दूसरे दिन आयोजक दल ने शूद्रक लिखित अमित झा निर्देशित 'मृच्छकटिकम' के मंचन से आयोजन का समापन हुआ। पुनः कालिदास रंगालय, पटना में 28 को लोक पंच, पटना द्वारा मिथिलेश्वर लिखित मिथिलेश सिंह नाट्य रूपांतरित एवं प्रवीण कुमार निर्देशित 'नुक्कड़ के पास वाली खिड़की', 29 को डॉ ज्ञान चतुर्वेदी लिखित संजय कुमार सिंह द्वारा नाट्य रूपांतरित एवं निर्देशित नाटक 'मदर इंडिया' का मंचन हुआ।

30 को श्री मति गिरिजा कुँवर उच्च विद्यालय,गाँधी मैदान, मसौढ़ी में जागृति कला मंच, मसौढ़ी, पटना द्वारा तीन दिवसीय 'मसौढ़ी नाट्य महोत्सव', के पहले दिन नाद, पटना ने डॉ अखिलेश कुमार जायसवाल लिखित मो जानी निर्देशित नाटक 'मृदंगिया', एवं सात्विक फाउन्डेशन, जहानाबाद ने हरिशंकर परसाई लिखित अंकित कुमार निर्देशित 'एक हसीना पाँच दीवाने' की प्रस्तुति की। इसके बाद मगही फिल्म 'देवेन मिसिर' का प्रमोशन हुआ। दूसरे दिन हमनवा, पटना ने सआदत हसन मंटो लिखित शबाना आफरीन निर्देशित 'तोहफा', एवं प्रयास, पटना ने मिथिलेश सिंह लिखित एवं निर्देशित नाटक 'दशरथ माँझी' का मंचन किया। समापन रंग समूह, पटना द्वारा बिहार के लोकगीतों पर आधारित 'लोक नृत्य' की प्रस्तुति के साथ हुई। इसका संयोजन कुमार उदय सिंह ने किया। 31 को दिनकर कला भवन, बेगूसराय में नटकिया, बेगूसराय द्वारा उदय प्रकाश लिखित आलोक रंजन द्वारा नाट्य रूपांतरित एवं निर्देशित नाटक 'तिरिछ' का मंचन हुआ।

-राजन कुमार सिंह

मसौढ़ी में मृदंगिया

थिएटर ओलम्पिक्स

सितारों ने दिखाई राह

कहते हैं आसमान में चमकने वाले सितारे जब आप की आंखों के सामने आकर चमकने लगे तो आपके सामने सपनो का एक नया फलक खुल जाता है । कुछ ऐसा ही अनुभव बिहार और विशेषकर पटना के थियेटर और सिनेमा जगत से जुड़े लोगों को 3 मार्च 18 से 16 मार्च 18 तक आठवें थियेटर ओलंपिक 2018 के पटना प्रवास के दौरान हुआ । इस थियेटर ओलंपिक का आयोजन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली संस्कृति मंत्रालय ,भारत सरकार और कला, संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार सरकार के द्वारा पटना में किया गया। इसके अंतर्गत न सिर्फ देश-विदेश की प्रतिष्ठित रंग संस्थाओं द्वारा भिन्न-भिन्न भाषाओं के नाटकों का मंचन प्रेमचंद रंगशाला, पटना में किया गया । बल्कि थिएटर, सिनेमा और इससे जुड़े स्वनामधन्य लोगों के साथ एलाइड एक्टिविटी के तहत शलिविंग लीजेंड सीरीजश श्इंटरफेसश और श्मास्टर क्लासश जैसे आयोजन भी किए गए । इन कार्यक्रमों के दौरान नवोदित कलाकारों और सुधी दर्शकों को इन चर्चित और सफल व्यक्तियों से सीधे बातचीत करने ,प्रश्न पूछने और अपनी शंकाओं का समाधान करने तथा इनके जीवन के अनुभवों से आगे बढ़ने और बहुत कुछ नया सीखने को मिला ।इन कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय नृत्य कला मंदिर , पटना के मुख्य सभा भवन और बहुउद्देश्यीय सांस्कृतिक परिसर में हुआ ।

7 मार्च को बिहार के बेतिया जिले के बेलवा गांव में जन्मे हिंदी रंगजगत , टी वी और सिनेमा के समर्थ और लोकप्रिय अभिनेता मनोज बाजपेई इंटरफेस कार्यक्रम के तहत दर्शकों के सामने आए। भारतीय नृत्य कला मंदिर के मुख्य सभाकक्ष में मनोज बाजपेई ने अपने अभिनेता बनने के संघर्ष और जुनून एवं इस मार्ग में आने वाली बाधाओं को दर्शकों के समक्ष जीवंत कर दिया। राज्य में नाट्य प्रशिक्षण विद्यालय की आवश्यकता का समर्थन करते हुए मनोज बाजपेई ने इसमें हर संभव मदद की बात कही। अपने टी वी सीरियल श्स्वाभिमानश से लेकर फिल्म श्सत्याश , श्पिंजरश श1971श, श्स्पेशल 26श, श्दस तोलाश , श्बेवफाश, वीर-जारा , श्गैंग्स ऑफ वासेपुरश और श्अय्यारीश तक की कहानी साझा करते हुए मनोज ने अपनी भोजपुरी बोलियों से सब का हृदय संबंधित कर दिया।

9 मार्च को लिविंग लीजेंड की श्रेणी में बिहार के प्रसिद्ध लोक गायक श्री भरत सिंह भारती दर्शकों से रूबरू हुए। इस कार्यक्रम के तहत भरत सिंह भारती ने अपनी जोरदार प्रस्तुति दी और अपने जीवन और गायकी के अनुभवों को सबसे साझा किया। जब 83 वर्षीय भारती ने अपने उसी पुराने जज्बे और तान के साथ मंच पर पदार्पण किया, तब दर्शक ष्उंगली में डंसले पिया नगिनिया होष् जैसे चिर युवा लोकगीतों पर झूम उठे ।

13 मार्च को लिविंग लीजेंड कार्यक्रम के तहत प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक कला निर्देशक और स्टेज डिजाइनर एम एस सथ्यू दर्शकों से रूबरू हुए। एम एस सथ्यू ने रंगमंच के कलाकारों के लिए आगे बढ़ने की मुख्य सलाह के रूप में अपनी लोकभाषा को मजबूत करने और समाज के प्रति प्रगतिशील सोच रखने को कहा ।

14 मार्च को श्मास्टर क्लासश कार्यक्रम के तहत पटना के ही हिंदी थिएटर, टी वी और हिंदी सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता विनीत कुमार सिनेप्रेमियों के समक्ष उपस्थित हुए। इनका कहना था कि रंगमंच पर चाहे आप जैसे भी नाटक कर लो , लेकिन बिना अभिनेता के रंगमंच अधूरा रहता है। अपनी अभिनय यात्रा के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि मेरा यह सफर यद्यपि संघर्षमय था , लेकिन शानदार रहा । पटना की रंग संस्था कला मंगल से इप्टा और इप्टा से एनएसडी और एनएसडी से मुंबई तक के सफर को विस्तार से बताते हुए विनीत कुमार ने नाट्य संस्थानों के बारे में कहा कि संस्थानों की भूमिका सीमित होती है, प्रयास तो स्वयं ही करना होता है।

15 मार्च को इंटरफेस कार्यक्रम के तहत बिहार के पटना में ही जन्मे हिंदी रंगमंच , टी वी और सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता संजय मिश्रा का आगमन भारतीय नृत्य कला मंदिर के बहुद्देश्यीय सांस्कृतिक परिसर में हुआ । खचाखच भरे सभागार में संजय मिश्रा ने अपने बिहारी होने के गर्व और बिहारीपन की छाप को सबके हृदय में अंकित कर दिया। संजय मिश्रा ने बिहार और बिहारी रंगमंच को लेकर कुछ गंभीर और सारगर्भित टिप्पणियां भी की। कहा कि अच्छी एक्टिंग के लिए अच्छा थिएटर करना जरूरी है। संस्थान सिर्फ आपको राह दिखाएंगे चलना आपको ही है। खुद से बातें कीजिए और अच्छा साहित्य पढ़िए ।

वास्तव में आठवें थियेटर ओलंपिक के एलाइड एक्टिविटी के तहत आयोजित किए गए इन कार्यक्रमों ने पटना के रंगमंच के कलाकारों और सुधी दर्शकों का पर्याप्त मार्गदर्शन किया तथा इस क्षेत्र में आगे बढ़ने की राह दिखाई है।

अविनाश कुमार झा

थियेटर ओलम्पिक्स में दिखे देश विदेश के रंग

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय,नई दिल्ली,संस्कृति मंत्रालय,भारत सरकार एवं कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार के संयुक्त तत्त्वाधान में 3 से 16 मार्च 2018 तक प्रेमचंद रंगशाला, राजेन्द्र नगरमें विश्व का सबसे बड़ा अंर्तराष्ट्रीय नाट्य महोत्सव 'थियेटर ओलम्पिक' हुआ। इस नाट्य महोत्सव में इटली एवं बांग्लादेश के अलावा भारत के विभिन्न राज्यों यथा पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब, मध्यप्रदेश, राजस्थान एवं जम्मू कश्मीर से कुल 14 नाट्य संस्थाओं ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। मंच नाटकों के अलावा बिहार की विभिन्न नाट्य दलों द्वारा नुक्कड़ नाटकों तथा सांस्कृतिक मंडलियों द्वारा लोकगीतों एवं लोकनृत्य की प्रस्तुति की गई।

3 मार्च को दि स्ट्रगलर्स ने ब्रजेश लिखित राहुल कुमार रवि निर्देशित 'सोल्ड', कला जागरण ने हीरालाल राय लिखित एवं निर्देशित 'तीन चोर' एवं इमैजिनेशन ने अभिषेक चौहान लिखित कुंदन कुमार निर्देशित 'डुप्लीकेट' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर नाट्योत्सव का पर्दा इंस्ताबिली वंगाती थियेटर कम्पनी, इटली द्वारा निकोला पिअंजोला लिखित ऐना दोरा दोनों निर्देशित अंग्रेजी भाषा के नाटक 'मेड इन इल्वा' के मंचन के साथ उठा। 4 मार्च को गौंड कम्पनी, ब्रम्हपुर,बक्सर द्वारा राजेन्द्र तूफानी लिखित लोक नृत्य शगोंड़ नाचश की प्रस्तुति हुई। मंच पर आराधना विश्वस्त मंडल, शोलापुर द्वारा लुइगी पिरंडल्लो लिखित विजय कुलकर्णी निर्देशित मराठी भाषा के नाटक 'नाटककाराच्या शोधत साहा पात्र' का मंचन हुआ। 5 को सदा ट्रस्ट, खगौल ने उदय कुमार लिखित एवं निर्देशित 'बिटिया बहादुर', लोक पंच ने नीरू कुमार लिखित रोज सिंह निर्देशित 'लड़की पढ़कर क्या करेगी' एवं माध्यम फाउंडेशनने प्रेमचन्द लिखित धर्मेश मेहता निर्देशित 'खुच्चड़' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर श्यामबाजार अन्यदेश, कोलकाता द्वारा रबीन्द्रनाथ टैगोर लिखित शुभाशीष गंगोपाध्याय निर्देशित बंगला भाषा के नाटक 'रक्त करबी' का मंचन हुआ। 6 को अखिलेश व्यास और गायन मंडली द्वारा गायन का कार्यक्रम हुआ। मंच पर ब्लैंक वर्स, कोलकाता द्वारा तीर्थांकर चंदा लिखित राजा भट्टाचार्या निर्देशित बंगला भाषा के नाटक 'इक्वेशन्स' का मंचन हुआ। 7 को आशा, छपरा ने हरिशंकर परसाई लिखित मो. जहाँगीर निर्देशित 'भोलाराम का जीव', नवांकुर, आरा ने राजू रंजन निर्देशित 'कलर्स' एवं दि संस्कृति आर्ट ने प्रेमचंद लिखित वसुधा कुमारी निर्देशित 'मुक्तिधाम' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर आनंदमयी समिति, कोलकाता द्वारा सपन साहा निर्देशित बंगला भाषी नाटक 'नाच महल' (जात्रा) का मंचन हुआ। 8 को दीप झंझारपुर, मधुबनी द्वारा इस्माइल पमारिया लिखित पमारिया नृत्य की प्रस्तुति हुई। मंच पर नया थियेटर, भोपाल द्वारा टैगोर लिखित कहानी विसर्जन और राजश्री पर आधारित हबीब तनवीर निर्देशित अंग्रेजी भाषी नाटक 'राज रक्त' का मंचन हुआ। 9 को द प्लेयर एक्ट, बेगूसराय ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र लिखित चन्दन कुमार सोनू निर्देशित 'सबे जात गोपाल के', प्रयास ने मिथिलेश सिंह लिखित एवं निर्देशित 'हमारी बेटी' एवं नाच ने कुणाल लिखित निखिल रंजन निर्देशित 'डर मैथिली' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर आसक्त कलामंच, पुणे द्वारा आमिर निरार जुबी लिखित मोहित ताकलकर निर्देशित हिन्दी-उर्दू नाटक 'मैं हुँ यूसुफ और ये मेरा भाई' का मंचन हुआ। 10 को आकाशगंगा रंग चौपाल एसोशिएशन, बीहट द्वारा लोकगायन लोकरंग बिहार की प्रस्तुति हुई। मंच पर फेम स्कूल ऑफ डांस, ड्रामा एंड म्यूजिक, बांग्लादेश द्वारा अल्बर्ट कामू लिखित अशीम दास निर्देशित बांग्ला भाषी नाटक 'कैलीगुला' का मंचन हुआ। 11 को एच एम टीने भारतेन्दु हरिश्चंद्र लिखित सुरेश कुमार हज्जु निर्देशित 'अंधेर नगरी', इप्टा ने सफदर हाशमी लिखित तनवीर अख्तर निर्देशित 'समरथ को नही दोष गोसाईं' एवं रंग उमंग ने सत्य प्रकाश लिखित एवं निर्देशित 'क्यों करें हम कॉम्प्रोमाईज' नुक्कड़ नाटकों का मंचन हुआ। मंच पर अपूर्वा सोसायटी, राजस्थान द्वारा डॉ कुमार राजीव लिखित एवं निर्देशित राजस्थानी भाषा के नाटक 'गरासिया' का मंचन हुआ। 12 को दोस्ताना सफर द्वारा संस्कार गीत, सोहर, बधैया आदि रेश्मा प्रसाद के निर्देशन में हुआ। मंच पर थियेटर फॉर कश्मीर, श्रीनगर द्वारा जॉन मिलिंगटन सिंगे लिखित अर्शद मुश्ताक निर्देशित कश्मीरी भाषा के नाटक 'अलाव' (पुकार) का मंचन हुआ। 13 को प्रेरणा ने हसन इमाम लिखित एवं निर्देशित 'पोल खुला पोर-पोर', अदब ने गिरिराज किशोर लिखित आदिल रसीद निर्देशित 'हम रोशनी बाँटते हैं' एवं अभियान ने जन नाट्य मंच लिखित गौतम गुलाल निर्देशित 'ये दौड़ है किसकी' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर डिपार्टमेंट ऑफ थियेटर एण्ड परफॉर्मेंस स्टडीज, बांग्लादेश द्वारा बंगला भाषा के नाटक 'फेद्रा' का मंचन हुआ। 14 को रंग रूप, वैशाली ने कृष्ण चंदर लिखित अंजारुल हक निर्देशित 'जामुन का पेड़', धमार फाउंडेशनने राजेश कुमार लिखित रूबी खातून निर्देशित 'हमें बोलने दो' एवं विश्वा, पटना ने सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित अभिषेक आनंद निर्देशित 'हवालात' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर नृत्यांचल डांस कम्पनी, बांग्लादेश द्वारा शेख हाफीजर रहमान लिखित सुकल्याण भट्टाचार्य निर्देशित बांग्ला, ब्रज बोली भाषा के नाटक 'राय कृष्ण पदावली' का मंचन हुआ। 15 को दि आर्ट मेकर ने सफदर हाशमी लिखित समीर कुमार निर्देशित 'राजा का बाजा', प्रस्तुतिने सफदर हाशमी लिखित शारदा सिंह निर्देशित 'औरत' एवं प्रवीण सांस्कृतिक मंच ने गुरुशरण सिंह लिखित विजयेन्द्र कुमार टॉक निर्देशित 'जंगीराम की हवेली' नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। मंच पर नांदीकार, कोलकाता द्वारा पार्थाप्रतीम देव लिखित सोहनी सेनगुप्ता निर्देशित बंगला भाषा के नाटक 'पान्चजन्य' का मंचन हुआ। 16 को दि स्ट्रगलर्स ने रमेश कुमार रघु लिखित एवं निर्देशित 'पेट की भूख' नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन किया। मंच पर मंच रंगमंच, अमृतसर ने नवनिन्दर बहल लिखित केवल धालीवाल निर्देशित पंजाबी भाषी नाटक 'नोरा' के मंचन के साथ अंर्तराष्ट्रीय नाट्योत्सव का पर्दा गिरा।

● राजन कुमार सिंह

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com